कैग ने बताया नगर निगम में हुआ 183.83 करोड़ का घोटाला

- कांग्रेसी विधायक का आरोप बिना काम के ही ठेकेदार को किया गया भुगतान
-मंत्री मूलचंद शर्मा ने घोटाला होने से इनकार नहीं किया, बोले जांच में सच्चाई आएगी सामने

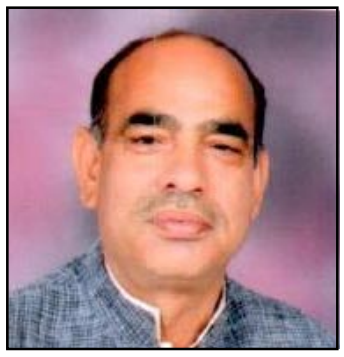

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) जिले में सत्ता के दुरुपयोग के रोजाना नए कीर्तिमान गढ़े जा रहे हैं। राजनेताओं के चहेते ठेकेदारों को लाखों रुपये का भुगतान बिना काम कराए ही किया गया, भ्रष्टाचार का गढ़ नगर निगम में हुए 183.83 करोड़ के घोटाले का भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) की रिपोर्ट में खुलासा हुआ। कैग रिपोर्ट पर कांग्रेस विधायक नीरज शर्मा ने मंत्री मूलचंद शर्मा पर सीधा हमला बोलते हुए उन्हें और उनके परिवार पर ठेकेदार से लाभ लेने का आरोप लगाया। मंत्री मूलचंद शर्मा इन आरोपों के खिलाफ ठोस पक्ष नहीं रख सके, हालांकि उन्होंने गलत पाए जाने पर पद छोड़ने का दावा किया।

एनआईटी विधायक नीरज शर्मा ने बताया कि हाल ही में आई कैग की रिपोर्ट में नगर निगम में विकास कार्यों के नाम पर 183.83 करोड़ रुपये के गबन का खुलासा हुआ है। उन्होंने दावा किया कि इसमें सबसे ज्यादा 150 करोड़ रुपयों की बल्लभगढ़ विधानसभा यानी मंत्री मूलचंद शर्मा के क्षेत्र में हेराफेरी हुई। उनका आरोप था कि ये सभी घोटाले सत्ता पक्ष के खास ठेकेदार सत्यवीरा ने किए। कैग रिपोर्ट का हवाला देते हुए उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि ठेकेदार सत्यवीरा ने महंगी लग्जरी कारें खरीदीं, ये कारें उसने किसे बांटीं इसकी जांच सरकार को करानी चाहिए। सत्यवीरा ने शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने के लिए कई नेताओं को हवाई यात्रा के टिकट भी खरीद कर दिए थे, इसका भुगतान उसके खाते से किया गया। कई नेताओं और उनके परिवार के सदस्यों को उसने अपने खर्च पर विदेश की हवाई यात्रा करवाई। नीरज शर्मा ने दावा किया कि सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार मंत्री मूलचंद शर्मा की विधानसभा क्षेत्र में हुआ। यहां बिना विकास कार्य कराए करीब डेढ़ सौ रुपयों का भुगतान सत्यवीरा को कराया गया। उन्होंने कहा कि सरकार को जांच करानी चाहिए कि सत्यवीरा के खाते से खरीदी गईं ये लग्जरी कारें उसने कुछ लोगों को उपहार में दीं लेकिन एंटी करप्शन ब्यूरो ने इसे पकड़ लिया। उन्होंने सवाल किया कि ये कारें किसको दीं गईं, हवाई यात्रा किसको करवाई गईं। बताया कि इस मामले में एंटी करप्शन ब्यूरो मंत्री मूलचंद शर्मा की भूमिका की भी जांच कर रही है।

भाजपा संगठन पर तंज कसते हुए कहा कि एक-एक वोटर को पकड़ने के लिए जिन पन्ना प्रमुखों को लगाया गया है उन्हें यदि डेढ़ सौ करोड़ से कराए गए विकास कार्यों की जांच कर रिपोर्ट देने को कह दिया जाए तो वे एक दिन में ही घोटाले की सच्चाई सामने ला देंगे। नीरज शर्मा ने कहा कि भाजपा शासन में भ्रष्टाचार अपने चरम पर है नेता अधिकारी मिल कर खुली लूट मचाए हुए हैं।

मंत्री मूलचंद शर्मा ने अपना पक्ष रखते हुए बताया कि उन्होंने किसी से भी पुरानी या नई कोई भी गाड़ी नहीं ली है। विदेश यात्रा के आरोप पर उनका कहना था कि मंत्री के तौर पर अपने महकमे की ओर से गया हूं ये सब पासपोर्ट में दर्ज है, परिवार पर इस तरह के आरोप लगाना ठीक नहीं है। उन्होंने कहा कि बल्लभगढ़ विधानसभा क्षेत्र में महज अस्सी करोड़ रुपये के विकास कार्य कराए गए, इनमें से सत्यवीरा के काम कितने थे, उसने कितने का घोटाला किया यह सब जांच का विषय है। हालांकि कैग रिपोर्ट में घोटाले का सत्यापन होने के बावजूद मूलचंद शर्मा बचाव में यह कहते नजर आए कि अभी तो कई विकास कार्य चल रहे हैं, अगर कोई गड़बड़ी है तो कार्रवाई की होगी। शपथ ग्रहण समारोह में हवाई यात्रा कर शामिल होने के मामले में उन्होंने कहा कि वह तो दो दिन पहले ही मुख्यमंत्री के पास पहुंच गए थे बड़े भाई निजी वाहन से गए थे। अब कौन लोग हवाई यात्रा कर गए इसकी जानकारी नीरज शर्मा को ही देनी चाहिए। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार के मामलों की जांच 2005 से कराई जानी चाहिए।

Paytm
MM
Majdoor Morcha
UPI ID: 8851091460@paytm
8851091460
Scan this QR or send money to 8851091460 from any app. Money will reach in Majdoor Morcha's bank account.

केवल पाठकों के दम पर चलने वाले इस अखबार को सहयोग देकर अपनी आवाज को बुलंद रखें।

मज़दूर मोर्चा- खाता संख्या- 451102010004150
IFSC Code : UBIN0545112
Union Bank of India, Sector-7, Faridabad

क्या अब आदिवासी पर पेशाब करने से विश्वगुरु बनेगा देश?

रोहित

आदिवासी पर एक भाजपा नेता के प्रतिनिधि ने पेशाब किया। जिस के बाद उस पर कार्रवाई हुई। सवाल यह कि ऐसे बेनाम अदर्ज अपराध हर रोज किसी गांव, शहर में हो रहे हैं, उस का क्या?

भाजपा सरकार में देश स्वर्णिम मूत्रकाल से गुजर रहा है। दलित आदिवासियों के मुंह पर थूक दो, पेशाब कर दो क्या फर्क पड़ता है। मध्य प्रदेश के सीधी जिले में भाजपा नेता के प्रतिनिधि प्रवेश शुक्ला ने तो, बस, आदिवासी दशमत रावत के मुंह पर पेशाब करने का अपराध या पौराणिक भाषा में कहें तो कर्तव्य दोहराया है लेकिन हकीकत यह है कि यह कोई नया अपराध नहीं है।

इस घटना के बाद भले मध्य प्रदेश के सीएम शिवराज सिंह चौहान ने पीड़ित के पैर धोए या आरोपी प्रवेश शुक्ला पर कार्रवाई की, लेकिन घटना के बाद जिस तरह पीड़ित दशमत ने आरोपी को माफ करने की बात कही उस से यही साबित होता है कि पौराणिकता कहीं न कहीं पीड़ित को मजबूर कर रही है कि वह इसे सह ले, और गुनाहगार को माफ कर दे।

यह घटना जातीय दंभ से भरे लोगों के लिए ऐसा करना कोई अनोखी बात भी नहीं है, क्योंकि ऐसा करने की प्रेरणा उन्हें वही धर्मशास्त्र रोज देते हैं जिन का गुणगान सुबह-शाम उठते-बैठते वे करते रहते हैं। ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में लिखा है कि शूद्र यदि वेद/पुराण पढ़ता है तो आंख फोड़ दो, सुनता है तो कान में पिघला सीसा डाल दो और उच्चारण करता है तो जीभ काट दो।

इसी देश के गांव में 'चप्पल प्रथा' क्या इस की गवाही नहीं जहां कथित सवर्णों के घरों से निकलने पर दलितों को अपने सिर पर चप्पल रख कर निकलना पड़ता था। बात कोई पुरानी नहीं है। दलित को जबरन जूते से पानी पिलाना यहीं की ही बात ह। ऊना कांड कोई पिछली सदी की बात नहीं, जहां बीच

सड़क पर नंगा कर दलितों पीटा गया, और हाथरस में दलित की बेटी से सवर्णों ने बलात्कार किया और उस का बचाव सब भगवाइयों ने किया। हिंदू राष्ट्र की मांग पर नाचने थिरकने वाले क्या ऐसा ही देश बनाना चाह रहे हैं, जहां मुसलामानों के प्रति नफरती उबाल के लिए तो सब हिंदू हो जाएंगे लेकिन बात जब खुद के धर्म की आएगी तो कोई सवर्ण होगा, कोई दलित, कोई आदिवासी?

इसी जातीय दंभ से भरे समाज में क्या ऐसी प्रथाएं नहीं रहीं जिन में दलितों को सूर्योदय के समय व सूर्यास्त के समय बाहर निकलने की मनाही थी ताकि उस की लंबी छाया किसी सवर्ण पर न पड़ जाए। नीची जाति वालों को अपनी कमर में झाड़ू लगा कर चलना पड़ता था कि जिस रास्ते वे जाएं वह रास्ता साफ़ होता जाए, और अपने पेट में टोकरी ले कर चलनी पड़ती थी कि अगर थूक आए या पसीना टपके तो जमीन पर न थूकें उसी टोकरी में थूकें।

'पूजयें विप्र सकल गुण हीना.. शूद्र ना पूजिये ज्ञान प्रवीणा..'यह श्लोक कहीं आसमान से नहीं टपका। भगवा कट्टरपंथी जिस मनुस्मृति को आंबेडकर के संविधान की जगह देश का विधि-विधान बनाना चाहते हैं वहीं से यह आया है। क्या है इस का अर्थ, "ब्राह्मण चाहे कितना भी व्यभिचारी हो, पूजा जाना चाहिए, क्योंकि शास्त्र उसे ब्रह्मा के मुख से आया बताते हैं। वहीं, नीची जाति वाला चाहे कितना ही ज्ञानी हो, उसे नहीं पूजना चाहिए।"

ऐसे ही रामचरितमानस में कहा गया है, "पद पखारि जलुपान करि आपु सहित परिवार पितर पारु प्रभुहि पुनि मुदित गयउ लेइ पार"

अर्थात-भगवान श्रीराम के चरण धो कर उसे चरणामृत के रूप में स्वीकार कर केवट न केवल स्वयं भव-बाधा से पार हो गया, बल्कि उस ने अपने पूर्वजों को भी तार दिया।

तुलसीदास ने सिर्फ़ रामचरितमानस में ब्राह्मणों को कम से कम 30 स्थानों पर भूसुर और महिसुर यानी "धरती का देवता" लिखा है। पूरी रामचरितमानस में किसी भी ब्राह्मण ने राम के पैर नहीं छुए हैं। राम ने दर्जनों बार ब्राह्मणों के पैर छुए और चरणामृत लिया है। मतलब जो भगवान राम से खुद की चरण वंदना करवाने का अधिकार समझते हैं वो तो किसी निचली जाति के दीनहीन पर कुछ भी करें कहें, उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। पिछले दिनों प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आदिवासियों को वनवासी कहा, मतलब जंगलों में रहने वाला। अब चूंकि आदिवासी जंगल में रहता है तो प्रवेश शुक्ला को भला वह शहर में कैसे हजम हो पाता।

इस घटना के बाद सरकार ने प्रवेश शुक्ला का घर बुलडोजर से ढहा दिया, उस पर एनएसए लगा दिया। इस से यह बात तो साबित हो जाती है कि जिस नफरत से दूसरों के घर जलाए जा रहे थे उस आग में खुद के भी हाथ जलते ही हैं।

यह सबक भगवाई कार्यकर्ताओं को समझ आएगी। लेकिन फिर भी सवाल यह कि क्या इस का इलाज बस यही है क्योंकि यह महज दर्ज हुआ अपराध है। ऐसे बेनाम अदर्ज अपराध हर रोज किसी गांव, शहर में हो रहे है। हाथ का पानी न पी कर, किसी खास समुदाय से कचरा/गंदगी साफ करवाना, जाति सुनते ही मुंह-नाक सिकोड़ने आदि का अपराध पूरा समाज कर ही रहा है.

इस साल की बाढ़ में कुछ भी अनूठा नही

योगेन्द्र यादव

इस साल की बाढ़ में कुछ भी अनूठा नहीं है। अगर कुछ विशेष है तो बस इतना कि इस बार बाढ़ वहां आई, जहां टी.वी. कैमरा है, जहां सत्ता के केंद्र हैं, जहां की पीड़ा देश को दिखाई और सुनाई देती है। वैसे देश में हर साल बाढ़ आती है। हर साल औसतन 1600 व्यक्ति मौत का शिकार होते हैं। असम के बड़े इलाके जलमग्न होते हैं, जान-माल और पशुधन का नुक्सान होता है। हर साल बिहार की लाखों हेक्टेयर जमीन पर बाढ़ का पानी आता है और कई बार महीनों तक टिका रहता है। उस बाढ़ की कोई सुध नहीं लेता। इस साल जब हमने बाढ़ देखने के लिए अपनी आंख खोली है, बाढ़ की विभीषिका के लिए अपना दिल खोला है तो क्या हम अपने दिमाग के दरवाजे भी खोलेंगे? इस बाढ़ से कोई सबक सीखेंगे?

हर बाढ़ अपने साथ आरोपों, बहानों और झूठ की बाढ़ भी लेकर आती है। इस साल चूंकि बाढ़ दिल्ली में आई, इसलिए जाहिर है आरोप और प्रत्यारोप की बाढ़ भी लाल निशान से ऊपर चली गई। क्या हरियाणा ने जानबूझकर हथिनीकुंड बैराज से जरूरत से ज्यादा पानी छोड़ा? क्या दिल्ली के मुख्यमंत्री ने बाढ़ नियंत्रण की सालाना बैठक नहीं की? क्या दिल्ली सरकार ने पानी निकासी की मशीन को ठीक करवाने में कोताही बरती? क्या अफसरों ने एन.डी.आर.एफ. और फौज को बुलाने में देरी की? बाढ़ के दोषारोपण पर चल रही इस कवायद से आशंका यही है कि सारा ध्यान राजनीतिक दाव-पेंच पर सीमित हो जाएगा और बाढ़ से जुड़े बुनियादी सवाल डूब जाएंगे। एक बार फिर हम बड़े-बड़े झूठ में बह जाएंगे।

बाढ़ से जुड़ा पहला बड़ा झूठ यह है कि बाढ़ केवल एक प्राकृतिक दुर्घटना है। जब भी बाढ़ आती है, उस वक्त जो भी सरकार में होता है, वह इसी झूठ का सहारा लेता है। सच यह है कि बाढ़ कोई भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदा नहीं है, जो कभी भी घट सकती है। बाढ़ का एक नियम है, कैलेंडर है, रूट है। एकाध अपवाद को छोड़ दें तो हर कोई जानता है कि बाढ़ कब और कहां आ सकती है। इसलिए बाढ़ का आना अपने आप में कोई दुर्घटना नहीं है, बाढ़ से जान-माल का नुक्सान एक ऐसी दुर्घटना है, जो टाली जा सकती है।

इसका विलोम दूसरा झूठ यह है कि बाढ़ पूरी तरह से मानवीय, तकनीकी और प्रशासनिक उपायों से नियंत्रित की जा सकती है, प्रकृति के बहाव को पूरी तरह से अपने बस में किया जा सकता है। आधुनिकता के इसी अहंकार के चलते देश में जगह-जगह बाढ़ नियंत्रण कार्यक्रम चलाए गए, तटबंध बनाए गए, पैसे पानी की तरह बहाए गए। अमूमन इन सरकारी प्रयासों से कुछ हासिल नहीं हुआ। बिहार में कोसी नदी को तटबंध से बांधने की असफल कोशिश इस झूठ का सबसे बड़ा जीता-जागता नमूना है। वर्षा, अतिवृष्टि, नदी में उफान, नदी का अपने तट से बाहर निकलना, यह सब सामान्य प्राकृतिक घटनाएं हैं। हमें पानी के बहाव के साथ जीना सीखना होगा। बाढ़ से जुड़े ये दोनों झूठ एक बड़े सच को छुपाते हैं, कि बाढ़ का मूल कारण प्रकृति नहीं बल्कि मानव है। बाढ़ के विनाश की जड़ में हमारी वह लालसा है, जिसे हम विकास कहते हैं। शहरी इलाकों में हमने नदी के प्राकृतिक बहाव के साथ इतना खिलवाड़ किया है कि उसने बाढ़ की सामान्य प्राकृतिक घटना को एक दुर्घटना में बदल दिया है।

पानी के सवाल पर बरसों से विश्वसनीय शोध कर रहे हिमांशु ठक्कर और उनकी संस्था साऊथ एशियन नैटवर्क ऑन डैम रिवर एंड पीपल (एस.ए.एन.डी.आर.पी.) ने दिल्ली में पिछले हफ्ते आई बाढ़ का प्रारंभिक विश्लेषण किया है, जो इस सच की पुष्टि करता है। इस विश्लेषण से स्पष्ट है कि इस बार यमुना की बाढ़ का प्रमुख कारण अकस्मात हुई भारी बारिश नहीं। सबसे अधिक बारिश उत्तर प्रदेश के उन जिलों में हुई, जिनका पानी यमुना में नहीं पहुंचता है। न ही हथिनीकुंड बैराज से छोड़ा पानी इसके लिए जिम्मेदार है। इस बार 11 जुलाई को बैराज से 3.6 लाख क्यूसेक पानी छोड़ा गया था, जबकि 2010, 2013, 2018 और 2019 में एक दिन में इससे कहीं ज्यादा पानी छोड़ा गया था। यूं भी दिल्ली पहुंचने से पहले वाले पांच मॉनिटरिंग सैंटरों में कहीं भी यमुना खतरे के निशान से ऊपर नहीं पहुंची थी।

यह रिपोर्ट इस बाढ़ के लिए मुख्यत: मानवीय दखल को जिम्मेदार मानती है। इसमें सबसे प्रमुख कारण है यमुना के आसपास के उस खुले इलाके पर कब्जा, जिसे दिल्ली में यमुना खादर क्षेत्र कहा जाता है और तकनीकी भाषा में फ्लडप्लेंस कहते हैं। दिल्ली में यमुना के 9700 हैक्टेयर के खादर क्षेत्र में से 1000 हैक्टेयर से ज्यादा भूमि पर पर्यावरण के नियमों का उल्लंघन कर पक्की इमारतें बना दी गई हैं। इनमें कॉमनवैल्थ खेलग्राम (64 हैक्टेयर), अक्षरधाम मंदिर (100 हैक्टेयर) और मैट्रो डिपो (110 हैक्टेयर) शामिल हैं। इसके अलावा दिल्ली में यमुना पर 26 ब्रिज और 3 बैराज बनाए गए हैं। इन सब के चलते दिल्ली में पहुंचते ही यमुना के पानी के पास फैलने की जगह नहीं बचती और बरसाती पानी का सामान्य उफान एक मानवीय दुर्घटना में बदल जाता है।

दिल्ली का शहरी विकास इस स्थिति को और भी विकट बनाता है। शहरीकरण के चलते दिल्ली के तालाब और जोहड़ नष्ट हो गए हैं, बारिश का पानी भूजल तक नहीं पहुंचता, बरसाती नाले अब गंदगी के सीवेज बन गए हैं और इस गंदगी को यमुना में छोड़ने के चलते नदी की तलहटी ऊंची हो गई है। इस परिस्थिति के चलते सामान्य से कुछ अधिक बारिश और सरकारी प्रबंधन की छोटी कोताही भी एक बड़ी दुर्घटना का स्वरूप ले लेती है।

यह कोई नई बात नहीं है। यमुना बचाने के अभियान की तरफ से द्विजेंद्र कालिया पिछले 3 दशक से इस खतरे को बार-बार चिह्नित करते रहे हैं। गांधीवादी कार्यकर्त्ता रमेश चंद शर्मा ने दिल्ली की इस बाढ़ के सबक को इस तरह व्यक्त किया: ''यमुना रौद्र रूप में संदेश दे रही है कि उसका खादर क्षेत्र लौटाया जाए। जो क्षेत्र में दैत्य खड़े किए गए हैं उन्हें हटाओ। मां को मां ही रहने दो, कचरा पेटी मत बनाओ। नदी क्षेत्र खादर को मुक्त करो। नदी आजादी मांग रही है। नदी बचेगी, जीवन बचेगा। संदेश नहीं सुनेंगे तो पश्चाताप करते हुए भुगतना पड़ेगा।'' जो सबक हमें असम और बिहार से सीख लेना चाहिए था, उसे क्या हम अब दिल्ली से सीखेंगे?